पु●ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Std-VIII Subject-Hindi

Summative Assessment Assignment-2 (2020-21)

(अपठित–विभाग)

प्र–१ अपठित गदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1)वास्तव में हृदय वही है, जो कोमल भावों और स्वदेश प्रेम से ओतप्रोत हो। प्रत्येक देशवासी को अपने वतन से प्रेम होता है, चाहे उसका देश सूखा, गर्म या दलदलों से युक्त हो। देश-प्रेम के लिए किसी आकर्षण की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह तो अपनी भूमि के प्रति मनुष्य मात्र की स्वाभाविक ममता है। मानव ही नहीं पशु-पक्षियों तक को अपना देश प्यारा होता है। संध्या समय पक्षी अपने नीड़ की ओर उड़े चले जाते हैं। देश-प्रेम का अंकुर सभी में विद्यमान है। कुछ लोग समझते हैं कि मातृभूमि के नारे लगाने से ही देश-प्रेम व्यक्त होता है। दिन-भर वे त्याग, बलिदान और वीरता की कथा सुनाते नहीं थकते, लेकिन परीक्षा की घड़ी आने पर भाग खड़े होते हैं। ऐसे लोग स्वार्थ त्यागकर जान जोखिम में डालकर देश की सेवा क्या करेंगे? आज ऐसे लोगों की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्नः 1देश-प्रेम का अंकुर कहाँ विद्यमान रहता है ?
उत्तरः देश-प्रेम का अंकुर हर प्राणी में विद्यमान रहता है।
प्रश्नः 2.गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।
उत्तरः गद्यांश का शीर्षक है-सच्चा देश-प्रेम।
प्रश्नः 3.देश-प्रेम और मानव हृदय का संबंध स्पष्ट कीजिए।
उत्तरः देश-प्रेम और मानव-हृदय में अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। कोमल भावों और देश-प्रेम से युक्त हृदय श्रेष्ठ होता है। अपनी भूमि के प्रति यह स्वाभाविक ममता हर हृदय में होती है।
प्रश्नः 4.पक्षी अपने देश के प्रति अपना लगाव कैसे प्रकट करते हैं?
उत्तरः पक्षी भी अपने देश के प्रति असीम लगाव रखते हैं। इसी लगाव के कारण, पक्षी दिन भर कहीं भी उड़े, दाना चुगें पर शाम के समय अपने घोंसले की ओर अवश्य लौट आते हैं।
प्रश्नः 5.गद्यांश के आधार पर सच्चे देश-प्रेमी की पहचान बताइए।
उत्तरः सच्चे देश-प्रेमी मातृभूमि के प्रति कोरे नारे लगाकर अपनी देशभक्ति प्रकट नहीं करते हैं। वे दूसरों को अपने त्याग और बलिदान की कहानियाँ नहीं सुनाते हैं, लेकिन आवश्यकता के समय मातृभूमि के लिए प्राणों की बाजी लगा देते हैं।

2) मानव जाति अपने उद्भवकाल से ही प्रकृति की गोद में और उसी से अपने भरण-पोषण की सामग्री प्राप्त की। सभी प्रकार के वन्य या प्राकृतिक उपादान ही उसके जीवन और जीविका के एकमात्र साधन थे। प्रकृति ने ही मानव जीवन को संरक्षण प्रदान किया। रामचंद्र, सीता व लक्ष्मण सभी ने पंचवटी नामक स्थान पर कुटिया बनाकर वनवास का लंबा समय व्यतीत किया था। वृक्षों की लकड़ी से मानव अनेक प्रकार के लाभ उठाता है। उसने लकड़ी को ईंधन के रूप में प्रयुक्त किया। इससे मकान व झोंपड़ियाँ बनाईं। इमारती लकड़ी से भवन-निर्माण, कृषि यंत्र, परिवहन, जैसे-रथ, ट्रक तथा रेलों के डिब्बे तथा फर्नीचर आदि बनाए जाते हैं। कोयला भी लकड़ी का प्रतिरूप है। वृक्षों की लकड़ी तथा उसके उत्पाद; जैसे-नारियल का जूट, लकड़ी का बुरादा, चीड़ की लकड़ी आदि का प्रयोग फल, काँच के बरतन आदि नाजुक पदार्थों की पैकिंग में किया जाता है।

प्रश्नः 1 लकड़ी और कोयले में क्या संबंध है?
उत्तरः लकड़ी और कोयले में यह संबंध है कि कोयला लकड़ी का ही बदला हुआ रूप है।
प्रश्नः 2.'भरण-पोषण' और 'भवन-निर्माण' का विग्रह करके समास का नाम बताइए।
उत्तरः भरण-पोषण = भरण और पोषण – द्वंद्व समास
भवन निर्माण = भवन और निर्माण – द्वंद्व समास
प्रश्नः 3.आदिमानव के लिए वन किस तरह लाभदायी रहे हैं?
उत्तरः आदिमानव ने वनों की गोद में जन्म लिया, वहीं पला-बढ़ा और अपने लिए भोजन प्राप्त किया। वन और उसके उत्पाद ही आदिमानव के जीने का सहारा थे। वनों ने ही आदिमानव को संरक्षण दिया।
प्रश्नः 4.वर्तमान में मनुष्य वृक्षों से किस तरह लाभ उठा रहा है?
उत्तरः वर्तमान में मनुष्य वनों से प्राप्त लकड़ी को ईंधन के रूप में प्रयोग कर रहा है। इनसे वह मकान बनाने, कृषि यंत्र, रथ, ट्रक तथा रेल के डिब्बे तथा अन्य बहुत-सी वस्तुएँ बना रहा है।
प्रश्नः 5.लकड़ी के अलावा वृक्षों के उत्पाद क्या हैं? मनुष्य इनका उपयोग किन कार्यों में कर रहा है?
उत्तरः लकड़ी के अलावा वृक्षों के अन्य उत्पाद हैं-नारियल का जूट, लकड़ी का बुरादा, चीड़ की लकड़ी आदि। इनका प्रयोग वह कल, काँच के बरतन आदि नाजुक सामानों की पैकिंग जैसे कामों में कर रहा है।

3) वहाँ वह सूर्य है जो चमकता है। तो सूर्य आखिर है क्या? वेदों में इसे एक पहिएवाले सुनहरे रथ पर सवार देवता कहा गया है, जिसे सात शक्तिशाली घोड़े पलक झपकते ही 364 लीग की रफ़्तार से दौड़ा कर ले जाते हैं। वह अपने रथ पर सवार होकर आसमान में घूमता रहता है और संसार की हर गतिविधि पर नज़र रखता है। किसने इसे बनाया, जिस पर धरती पर मौजूद जीवन पूरी तरह से निर्भर है? क्या यह मरता हुआ विशाल तारा है या कोई वैज्ञानिक चमत्कार या वाकई सूर्य देवता हैं जो वेदों की साकार आत्मा हैं और जो त्रिदेव का प्रतिनिधित्व करता है-दिन में ब्रह्मा, दोपहर में शिव और शाम में विष्णु।भारतीय पौराणिक गाथाओं के अनुसार, सूर्य के माता-पिता थे-अदिति और कश्यप। अदिति के आठ बच्चे थे। आठवाँ बच्चा अंडे की शक्ल का था। इसलिए उसका नाम रखा मार्तंड यानी मृत अंडे का पुत्र और उसका परित्याग कर दिया। वह आसमान में चला गया और खुद को वहाँ महिमामंडित कर लिया। दूसरा किस्सा यह है कि, अदिति ने एक बार अपने पहले सात पुत्रों से कहा कि वे ब्रह्मांड का सृजन करें। किंतु वे इसमें असमर्थ रहे। क्योंकि वे सिर्फ जन्म को जानते थे, मृत्यु को नहीं। जीवन चक्र स्थापित करने के लिए अमरत्व की ज़रूरत नहीं थी, सो अदिति ने मार्तंड से कहा। उन्होंने फ़ौरन दिन और रात का सृजन कर दिया, जो जीवन और मृत्यु के प्रतीक थे।

प्रश्नः 1.मार्तंड द्वारा दिन और रात के सृजन का क्या उद्देश्य था?
उत्तरः मार्तंड द्वारा दिन और रात के सृजन का उद्देश्य था—जीवन और मृत्यु का सृजन कर जीवन चक्र स्थापित करना।
प्रश्नः 2 वेदों में सूर्य का वर्णन किस तरह किया गया है?
उत्तरः वेदों में सूर्य को एक पहिएवाले रथ पर सवार देवता बताया गया है। इस रथ को सात घोड़े द्रुत गति से खींचते हैं। इस पर सवार होकर सूर्य आसमान का चक्कर लगाता हुआ संसार की हर गतिविधि देखता है।
प्रश्नः 3. भारतीय पौराणिक गाथाओं के अनुसार सूर्य क्या है?
उत्तरः पौराणिक गाथाओं के अनुसार, सूर्य अपने माता-पिता अदिति और कश्यप की आठवीं संतान है। अंडे की शक्ल होने के कारण उसका नाम मार्तंड रखा। माता-पिता द्वारा त्यागे जाने पर वह आसमान चला गया।
प्रश्नः 4. सूर्य के संबंध में प्रचलित किस्से के आधार पर सूर्य के महिमामंडन का कारण क्या है ?
उत्तरः सूर्य के महिमामंडन का कारण यह है कि अदिति के कहने पर सूर्य के सातों पुत्र ब्रहमांड का सृजन करने में असफल रहे, पर सूर्य ने दिन-रात का सृजन कर जीवन चक्र स्थापित कर दिया और महिमा मंडित हो गया।
प्रश्नः5 गदयांश का उचित शीर्षक दीजिए |
उत्तर : भारतीय पौराणिक कथा

*** निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए|**

1) तरुणाई है नाम सिंधु की उठती लहरों के गर्जन का,
चट्टानों से टक्कर लेना लक्ष्य बने जिनके जीवन का।
विफल प्रयासों से भी दूना वेग भुजाओं में भर जाता,
जोड़ा करता जिनकी गति से नव उत्साह निरंतर नाता।
पर्वत के विशाल शिखरों-सा यौवन उसका ही है अक्षय,
जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।
अचल खड़े रहते जो ऊँचा, शीश उठाए तूफ़ानों में,
सहनशीलता दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।

(क) कवि ने किसका आह्वान किया है?
(ख) तरुणाई की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है ?
(ग) चट्टानों से टक्कर लेने का क्या तात्पर्य है?
(घ) मार्ग की रुकावटों को कौन तोड़ते हैं और कैसे?
(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए-'जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।'
(च) कवि ने युवाओं का अह्वान क्यों किया है ?

उत्तर:

(क) कवि ने युवाओं का आह्वान किया है।
(ख) तरुणाई की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है-उत्साह, कठिन परिस्थितियों का सामना करना, हार से निराश न होना, दृढ़ता, सहनशीलता आदि।
(ग) चट्टानों से टक्कर लेने का तात्पर्य है-रुढ़ियों के खिलाफ संघर्ष करना।
(घ) मार्ग की रुकावटों को युवा शक्ति तोड़ती है। जिस प्रकार झरने चट्टानों को तोड़ते हैं, उसी प्रकार युवा शक्ति अपने पंथ की रुकावटों को खत्म कर देती है।
(ङ) इसका अर्थ है कि युवा शक्ति जनसामान्य में उत्साह का संचार कर देती है।
(च) कवि ने युवाओं का आह्वान किया है क्योंकि उनमें उत्साह व संघर्ष करने की शक्ति होती है।

2) शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख-भाग न सबका सम हो।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो
नहीं किसी को कम हो।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ।
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जिएँ या कि मिट जाएँ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समय को,
जीत, या कि ख़ुद मर के।
किसने कहा पाप है? अनुचित
स्वत्व-प्राप्ति-हित लड़ना?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना-मरना?

प्रश्नः
(क) कवि के अनुसार शांति के लिए क्या आवश्यक शर्त है?
(ख) तेजस्वी किस प्रकार समय को छीन लेते हैं?
(ग) न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए?
(घ) कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए क्यों प्रेरित कर रहे हैं ?
(ङ) यदि आपको अधिकार से अन्यायपूर्वक वंचित किया जाता है तो आपको क्या करना चाहिए?
(च) उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तर:
(क) कवि के अनुसार, शांति के लिए आवश्यक है कि संसार में संसाधनों का वितरण समान हो।
(ख) अपने अनुकूल समय को तेजस्वी जीतकर छीन लेते हैं।
(ग) न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को संघर्ष करना पड़ता है। अपना हक माँगना पाप नहीं है।
(घ) कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए इसलिए प्रेरित कर रहे हैं ताकि वे अपने हक को पा सकें, अपने प्रति अन्याय को खत्म कर सकें।
(ङ) यदि आपको अधिकार से अन्यायपूर्वक वंचित किया जाता है तो हमें अपने अधिकार के लिए लड़ना चाहिए। इसके लिए हमें हथियार उठाने में भी संकोच नहीं करना चाहिए।
(च) शीर्षक- अधिकार

लेखन-विभाग

* निबंध

1) बेरोजगारी की समस्या और समाधान पर निबंध

भारत में अन्य समस्याओं की तरह बेरोज़गारी एक प्रमुख और गंभीर समस्या के रूप में उभर कर आयी है। बेरोजगारी का अर्थ है योग्यता और प्रतिभाओं के बावजूद रोजगार के अवसर पाने में नाकामयाब होना। हमारे देश में लाखो युवको के पास डिग्री और अच्छी शिक्षा है फिर भी किसी कारणवश उन्हें नौकरी नहीं मिल पाता है। बेरोजगार व्यक्ति यानी व्यक्ति हर मुमकिन या नामुमकिन कार्य करना चाहता है मगर दुर्भाग्यवश उसे नौकरी नहीं मिल पाती है।हमारे देश में बेरोजगार जैसी समस्याएं निरंतर ज़ोर पकड़ रही है। हमारे देश में नौजवान के पास उच्च शिक्षा संबंधित डिग्रीयां होने के बावजूद उन्हें अपनी क्षमता के अनुसार रोजगार के अवसर नहीं मिल पा रहे है। हर रोज़ युवक इंटरव्यू की लम्बी कतारों में खड़े होते है और आये दिन कई दफ्तरों के चक्कर लगाते है ताकि उन्हें एक बेहतर नौकरी मिल जाए। कुछ एक को छोड़कर कई युवको को नौकरी ना मिलने के कारण अपने हाथ मलने पड़ते है।

भारत में दिन प्रतिदिन बेरोज़गारी की वृद्धि के कई कारण है। सबसे प्रमुख है जनसंख्या वृद्धि। भारत की जनसंख्या लगभग 130 करोड़ है। जनसंख्या वृद्धि एक मुख्या समस्या है जो बेरोज़गारी के लिए 100 फीसदी जिम्मेदार है। जितनी ज़्यादा जनसंख्या होगी उतनी ही रोजगार के स्तर पर मुकाबला होगा जिसमे ज़्यादातर लोगो को रोजगार के अवसर नहीं मिलेंगे अर्थात नौकरी के पोस्ट यानी पद कम होंगे और उम्मीदवार ज़्यादा होंगे और गिने चुने लोगो को ही योग्यता अनुसार नौकरी मिलेगी।
आद्योगिक क्षेत्र में बढ़ता मशीनीकरण भी बेरोजगारी का दूसरा प्रमुख कारण है जिसके अंतर्गत एक मशीन चुटकी भर में कई लोगो के काम कर देता है जिससे कई लोग बेरोज़गार के दर पर आकर खड़े हो जाते है। मशीने कम वक़्त में जल्दी कार्य कर सकता है। इसी वजह से लोगो को रोजगार के अवसर मिलना बिलकुल ना के बराबर हो जाते है।

दुनिया में हर देश में बेकारी संबंधित समस्याएं है लेकिन भारत में इस समस्या ने चरम सीमा पकड़ ली है। जनसँख्या वृद्धि जिस रफ़्तार से बढ़ रही है वह दिन दूर नहीं भारत जनसँख्या वृद्धि में पहले पायदान पर खड़ा पाया जाएगा। बेकारी का अगला प्रमुख कारण है शिक्षा प्रणाली। शिक्षा प्रणाली में कोई सुधार नहीं हुआ है यहाँ बिज़नेस संबंधित शिक्षा का अभाव देखा जा सकता है। विद्यार्थिओं को तकनिकी शिक्षा पर ज़ोर देना चाहिए। प्रैक्टिकल क्षेत्रों पर

पढ़ाने की आवश्यकता है ताकि युवक रटे रटाये नागरिक न बने। इंजीनियर तो है पर उन्हें मशीनो पर कार्य करना नहीं आता है।

हमे अपनी शिक्षण प्रणाली को रोजगार अनुकूलित बनाना होगा। व्यावसायिक शिक्षा को महत्व देने की आवश्यकता है। जो युवक स्वंग रोजगार करने की चाह रखते है उन्हें क़र्ज़ प्रदान करना सरकार की जिम्मेदारी होनी चाहिए। देश में कल -कारखानों और नए उद्योगों की स्थापना करनी होगी जहाँ बेहतर रोजगार के अवसर मिल सके। सबसे पहले भ्रष्टाचार जो पीढ़ियों दर चली आ रही समस्याएं है जिन पर पर रोक लगाना आवश्यक है युवाओं की उम्मीदों को सही दिशा में प्रोत्साहित करना होगा ताकि वह रोज़गार अवसर हेतु नविन विचारो को तय कर सके।

भारत में बेरोजगारी मिटाने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही है। आये दिन सरकार कई योजनाएं ले आयी है जैसे प्रधानमंत्री स्वरोजगार योजना और शिक्षित बेरोजगार लोन योजना जिनका हमे सोच समझकर उपयोग करने की ज़रूरत है। गरीबी की रेखा में जीने वाले लोगो की अशिक्षा को मिटाने की पुरज़ोर कोशिश करनी होगी।

2) क्रिसमस (25 दिसम्बर) पर निबंध

सभी पर्व ओर त्योहार परस्पर प्रेम, भाईचारा, मेल मिलाप का संदेश देता हे, दूसरे शब्दों में सभी पर्वो , त्योहार से हमे सदाचार , सहानुभूति, परस्पर सहयोग और मानवता की भावना प्राप्त होती है। यह ध्यान देने की बात हैं। कि कोई भी पर्व या त्योहार चाहे स्वदेशी हो या विदेशी हो,चाहे गरीब हो या अमीर वर्ग का क्यों ना हो, उसमे उपर्युक्त विशेषता ओर श्रेष्ठता अवश्य होती है।

क्रिसमस 25 दिसम्बर का पर्व या त्योहार-पर्व है। जिसे न केवल ईसाई धर्म के अनुयायी या समर्थक ही मनाते है, अपितु इसे टी विशव के प्रायः सभी धर्मो ओर सम्प्रदाय के लोग मनाते है। इस प्रकार बिना किसी भेदभाव के पूरे विशव में मनाया जाता है। इसे बिना कोई भेदभाव के मनाने का एक कारण यह भी है। यह त्योहार ईसामसीह जी के जन्मदिन के उपलक्ष में मनाया जाता है। जिन्होंने मानवता का संदेश पूरे विशव को दिया । ईसामसीह ने भेदभाव को मिटाने के लिए अपने प्राणों की भी चिंता नही की।यो तो ईसामसीह के विषय मे अनेक लोकमत है, तथापि यह सर्वमान्य मत है। कि उनका जन्म 25 दिसम्बर की रात को 12 बजे बेथलम शहर की एक गौशाला में हुआ था। देवदूतों के संदेश से लोगों ने इन्हें महापुरुष के रूप में स्वीकार कर लिया । लोगो ने यह मान लिया की इन्हें परमात्मा ने यहुदियों से मुक्ति दिलाने के लिए इस धरती पर भेजा है। यहूदियों के बढ़ते हुए अत्याचारों ने ईसामसीह को बहुत बड़ी-बड़ी यातनाएं दी। फिर भी ईसामसीह अपने दृढ़ निश्चय से तनिक भी टस से मस नही हुए।

ईसामसीह जे दृढ़ निश्चय को देखकर क्रूर यहूदियों ने उन्हें समाप्त कर देने के लिए अनेक कठोर कदम उठाए। ईसामसीह ने उनसे स्पष्ट रूप से कह दिया- "यदि तूम मुझे मार डालोगे तो, में तीसरे दीन फिर से जी उठूँगा" अंतः ईसामसीह को शुक्रवार को सूली पर चढ़ाया दिया गया।इसलिये शुक्रवार को ईसाई धर्म के लोग गुडफ्राइडे के रूप में मनाते है। यह शोक पर्व के रूप में ईसाइयों के द्वारा मनाया जाता है। गुडफ्राइडे का भी ईसाई धर्म मे बहुत बड़ा स्थान है।क्रिसमस का त्योहार पूरे विशव में बड़े ही पवित्र भाव से ईसामसीह का जन्म के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह उनके प्रति सच्चई श्रधा भाव रखकर मनाया जाता है। इस प्रकार क्रिसमस का त्योहार एक ऐसा व्यापक और विस्तृत प्रभाव रखने वाला पर्व है, जो गांव-शहर, देश विदेश में बड़े आनंद ओर उत्साह के साथ मनाया जाता है। क्रिसमस का प्रभाव बड़े ही जोरदार रूप में होता है। इसके आने की प्रतीक्षा बहुत पहले से ही कि जाने लगती है। धीरे -धीरे जैसे यह करीब आता है। वैसे ही इसकी तैयारी में तेजी आने लगती है। इसके साथ ही साथ लोंगो में उत्साह और उत्सुकता की तरंगों में व्रद्धि लगातार होने लगती है।

क्रिसमस की तैयारी में लगे लोग अपने ; अपने घरों, स्थानो ओर दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं की सफाई-सजावट करने में कोई कसर नही छोड़ते है। क्रिसमस के आ जाने पर लोंगो की खुशी का ठिकाना ही नही रहता। सुबह-सुबह ईसाई धर्म को मॉनने वाले ओर इसके समर्थक ईसामसीह के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति - भावना प्रकट करने के लिए गिरिजाघर में जाते है। वहाँ जाकर ईसामसीह के लिए प्राथना बड़े ही पवित्र मन से किया करते है। दिन-भर मिठाई एक दुसरे को बाटते है। मिठाई बाटने का कार्यक्रम अनेक स्थानों पर आयोजित किये जाते है।अपनी शक्ति और सामर्थ्य के साथ लोग अपने घरों में अपने रिश्तेदारों और मित्रो को आमंत्रित करते है। उन्हें सम्मानपूर्वक दावत देते है।मिठाई खिलाते है। फिर उनके साथ अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते है। इसके बाद उन्हें सम्मानपूर्वक विदा करते है।

क्रिसमस का त्याहार हमारी सोई हुई नैतिकता , मानवता ओर सच्चाई-ईमानदारी को जगाता है। इसलिए हमें इसे ईसामसीह जे प्रति अपने पवित्र भावनाओं को रखते हुए खूब उल्ल्लास ओर सदभावनापुर्वक परस्पर सहानुभूति को रखते हुए मनाना चाहिए।

3) ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पर निबंध

यकीनन डॉ. अब्दुल कलाम ने अपने इस कथन को अपने निजी जीवन में चरितार्थ कर दिखाया। सूर्य की तरह जलकर ही वह सूर्य की तरह चमके और इस देश को अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से आलोकित कर अमर हो गए। साधारण पृष्ठभूमि में पले-बढ़े कलाम तमाम अभावों से दो-चार होने के बावजूद विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए न सिर्फ एक सफल और महान वैज्ञानिक बने, बल्कि देश के सर्वोच्च पद तक भी पहुंचे। वह जीवन की कठिनाइयों के सामने न तो कभी कमजोर पड़े और न ही इनसे घबराए।
उनका जीवन दर्शन कितना व्यावहारिक एवं उच्च था, इसका पता उनके इस कथन से चलता है –"इंसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है, क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी हैं।" सच्चे अर्थों में वह एक उच्च कोटि के राष्ट्रनायक थे।

डॉ. कलाम ने फर्श से अर्श तक का सफर तय किया। 15 अक्टूबर, 1931 को भारत के तमिलनाड प्रांत के रामेश्वरम में एक गरीब तमिल मुस्लिम परिवार में इस असाधारण प्रतिभा ने जन्म लिया। जन्म के समय शायद ही किसी ने सोचा हो कि यह नन्हा बालक आगे चलकर एक राष्ट्र निर्माता के रूप में भारत को बुलंदी पर ले जाएगा। कलाम के पिता जैनल आबिदीन पेशे से मछआरे थे तथा एक धर्मपरायण व्यक्ति थे।
उनकी माता आशियम्मा एक साधारण गृहिणी थीं तथा एक दयालु एवं धर्मपरायण महिला थीं। मां-बाप ने अपने इस सबसे छोटे बेटे का नाम अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम रखा। जीवन के अभाव कलाम के प्रारंभिक जीवन से ही जुड़े हुए थे। संयुक्त परिवार था और आय के स्रोत सीमित थे। कलाम के पिता मछुआरों को किराए पर नाव दिया करते थे। इससे जो आय होती थी, उसी से परिवार का भरण-पोषण होता था। विपन्नता के बावजूद माता-पिता ने कलाम को अच्छे संस्कार दिए। कलाम के जीवन पर उनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। वे भले ही पढ़े-लिखे नहीं थे, किन्तु उनके दिए संस्कार कलाम के बहुत काम आए।

पांच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम के पंचायत प्राथमिक विद्यालय से उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्रारंभ की। यहीं उन्हें उनके शिक्षक इयादराई सोलोमन से एक नेक सीख मिली_"जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था, अपेक्षा इन तीनों शक्तियों को भली-भांति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित कर लेना चाहिए।" नन्हें कलाम ने इस सीख को आत्मसात कर आगे का सफर शुरू किया। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा के दौरान जिस प्रतिभा का परिचय दिया, उससे उनके शिक्षक बहुत प्रभावित हुए। प्रारंभिक शिक्षा के दौरान ही अर्थाभाव आड़े आया तो उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखने एवं परिवार की आय को सहारा देने के लिए अखबार बांटने का काम किया। प्रारंभिक शिक्षा के बाद कलाम ने रामनाथपुरम के एक विद्यालय से हाईस्कूल की शिक्षा पूरी की।

विज्ञान में उनकी गहरी रूचि शुरू से थी। वर्ष 1950 में उन्होंने तिरुचरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज में प्रवेश लिया और वहां से बीएससी की डिग्री प्राप्त की। अपने अध्यापकों की सलाह पर उन्होंने स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए 'मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी', चेन्नई का रुख किया। वहां पर उन्होंने अपने सपनों को आकार देने के लिए एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग का चयन किया।मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी' से तालीम पूरी करने के बाद एक उदीयमान युवा वैज्ञानिक के रूप में कलाम ने विज्ञान के क्षेत्र में अपने स्वर्णिम सफर की शुरुआत की। वर्ष 1958 में उन्होंने बंगलुरू के सिविल विमानन तकनीकी केन्द्र से अपनी पहली नौकरी की शुरूआत की, जहां उन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हुए एक पराध्वनिक लक्ष्यभेदी विमान का डिजाइन तैयार किया। कलाम के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब वर्ष 1962 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' (इसरो) से जुड़ने का मौका मिला। जहां एक वैज्ञानिक के रूप में अपनी उपलब्धियों से डॉ. कलाम ने भारत के गौरव को बढ़ाया, वहीं भारत के राष्ट्रपति के रूप में उनका कार्यकाल सराहनीय रहा।

वर्ष 2002 में डॉ. कलाम भारत के 11वें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। उन्होंने देश भर में घूम-घूम कर असंख्य छात्रों को प्रेरित करने, उनके सपने जगाने और उन्हें पूरा करने का जो मंत्र दिया, उसकी मिसाल मिलनी मुश्किल है। उन्होंने यह भी दिखाया कि अपना काम करते हुए विवादों से कैसे दूर रहा जा सकता है। एक अराजनीतिक व्यक्ति

होते हुए भी डॉ. कलाम राजनीतिक दृष्टि से सम्पन्न थे। अपनी इसी दृष्टि के बल पर उन्होंने भारत की कल्याण संबंधी नीतियों का जो खाका खींचा, वह अद्‌भुत है। उनकी सोच राष्ट्रवादी थी। वह एक महान देश हितैषी थे। भारत को एक सबल और सक्षम राष्ट्र बनाना उनका सपना था।

आज कलाम साहब हमारे बीच भले ही नहीं हैं, किन्तु वह देश के नन्हें-मुन्नों की चमकती आंखों, युवकों की आंखों में झिलमिलाते सपनों और बुजुर्गों की उम्मीदों में सदा अमर रहेंगे। हम उनके सपनों का भारत बनाकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

4) खेल-कूद का महत्त्व पर निबन्ध

हमारे जीवन में खेल-कूद का अत्यधिक महत्त्व है । इससे हमारा शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है । यही कारण है कि सभी विद्यालयों में पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद के कार्यक्रमों को भी प्रधानता दी जाती है ।वास्तव में मूल-कूद के बिना प्राप्त शिक्षा अधूरी ही है । हम लोग विभिन्न प्रकार के खेल खेलते हैं । कुछ खेल घर में या किसी कक्ष में खेले जा सकते हैं । शतरंज, वीडियो गेम्स, लूडो, कैरम आदि खेलों से हमारा मनोरंजन तो अवश्य होता है परंतु उचित व्यायाम नहीं हो पाता ।

अत: हमें इनडोर गेम्स के साथ-साथ कुछ आउटडोर गेम्स भी अवश्य खेलने चाहिए । क्रिकेट, हॉकी, फुटबाल, बॉलीबाल, बैडमिंटन, लॉन टेनिस, कबट्टी आदि अनेक ऐसे खेल हैं जिनसे भरपूर व्यायाम होता है । मैदानों में खेले जाने वाले सभी खेल हमारे भीतर नया उत्साह एवं उमंग भर देते हैं ।शरीर का रक्त-संचार तेज होता है जिससे हमें स्कूर्ति का अनुभव होता है । कई टीम आधारित खेल बच्चों तथा युवाओं में 'समूह भावना' या 'टीम स्पीरिट' का विकास करते हैं । इससे हमें पता चलता है कि यदि सामूहिक प्रयास किए जाएँ तो किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त हो सकती है

खेल के विभिन्न नियमों के पालन के माध्यम से बच्चों को आरंभ से ही अनुशासन की शिक्षा मिलती रहती है । निशानेबाजी, घूँसेबाजी, साइक्लिंग, अश्वारोहण तथा एथलेटिक्स के खेलों के माध्यम से हमारे अंदर साहस वीरता तथा तन्मयता आती है । हम अपनी शक्ति का विकास कर उसका उचित उपयोग करना सीखते हैं । खेल-कूद एक ऐसा-क्षेत्र बनता जा रहा है जहाँ आजकल धन और यश दोनों का मिलन है । खिलाड़ी न केवल अपना अपितु अपने देश और समाज का भी नाम रोशन करते हैं ।

सचिन तेंदुलकर, कपिलदेव, ध्यानचंद, विश्वनाथन आनंद, सानिया मिर्जा, महेश भूपति जैसे भारतीय खिलाड़ियों ने दुनिया में भारत का नाम ऊँचा किया है । खेल हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक होते हैं । बच्चा खेल-खेल में ही बहुत कुछ सीख लेता है । खेल-कूद हमारे सर्वांगीण विकास का एक मजबूत आधार स्तंभ है ।

* पत्र–लेखन

1)विद्यालय में योग-शिक्षा का महत्त्व बताते हुए किसी समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

सेवा में,
सम्पादक महोदय,
दैनिक जागरण,
सेक्टर 30,
दिनांक-26 अप्रैल, 2019
चण्डीग़ढ़, ज़िरखपूर।
विषय– योग–शिक्षा का महत्त्व।
महोदय,

जन–जन की आवाज, जन–जन तक पहुँचाने के लिए प्रसिद्ध आपके पत्र के माध्यम से मैं विद्यालय में योग–शिक्षा के महत्त्व को बताना चाहती हूँ और प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाना चाहती हूँ।

योग–शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होंगें। योग शिक्षा उनके स्वास्थय के लिए बहुत अधिक लाभदायक है। योग के माध्यम से वे अपने शरीर की नकारात्मक ऊर्जा को बाहर निकाल सकते हैं और सकारात्मक ऊर्जा को ग्रहण कर सकते हैं। योग के जरिए वे अपने तन–मन दोनों को स्वस्थ रख सकते हैं और उनके सर्वांगीण विकास में भी सहायता मिलती रहेगी।

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपने समाचार–पत्र के माध्यम से पाठकों को योग के प्रति जागरूक करे और लोगों को योग–शिक्षा ग्रहण करने के लिए आग्रह करें।

धन्यवाद।

भवदीया

(नाम, पता, दूरभाष)

2)पुस्तकालय में हिंदी की पुस्तकें और पत्रिकाएं मंगवाने के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए|

सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
मेट्रो पब्लिक स्कूल
गोविंदपुरी, दिल्ली

विषय – पुस्तकालय में हिंदी की पुस्तकें तथा पत्रिकाएं मंगवाने के संबंध में प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा आठ "ब" का छात्र हूं। हिंदी लेख एवं कविता आदि में मेरी रुचि को देखते हुए मुझे हाल ही में विद्यालय की हिंदी समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। महोदय, मैं चाहता हूं कि मेरी तरह अन्य छात्र-छात्राओं में भी रुचि बढ़े। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालय के पुस्तकालय में हिंदी की नवीनतम पुस्तकें एवं पत्रिकाएं मंगवाने का तत्काल प्रबंध किया जाए। वर्तमान में पुस्तकालय में जो पुस्तकें हैं वे कई वर्ष पुरानी है । विशेषकर विज्ञान एवं तकनीकी संबंधी विषयों पर पुस्तक एवं पत्रिकाओं का नितांत अभाव है। आप स्वयं ही सोच सकते हैं कि आज के दौर में यदि कंप्यूटर इंटरनेट आदि विषयों पर पुस्तकें उपलब्ध नहीं होंगी तो कौन छात्र पुस्तकालय में जाकर पुस्तकें पढ़ना चाहेगा ?

अतः आपसे निवेदन है कि पुस्तकालय प्रभारी को तत्काल ही नवीनतम पुस्तकें एवं पत्रिकाएं मंगवाने के लिए निर्देश दे। इन पुस्तकों के अध्ययन से छात्रों के ज्ञान का स्तर ऊंचा उठेगा। साथ ही छात्र- छात्राओं की हिंदी के विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने में रुचि बढ़ेगी। आशा है आप मेरे निवेदन पर रुचि को ध्यान देकर शीघ्र ही आवश्यक निर्देश देने की कृपा करेंगे।

आपकी इस कृपा के लिए मैं सदैव आप का आभारी रहूंगा।

धन्यवाद।
आपकी आज्ञाकारी शिष्य
अतुल अग्रवाल
कक्षा – आठ "ब", अनुक्रमांक-4
दिनांक – 12 सितंबर, 2019

3)आपके जन्म दिन पर आपके मामा जी ने आपको एक सुंदर उपहार भेजा है। इस उपहार के लिए धन्यवाद एवं कृतज्ञता व्यक्त कीजिए।

जी० 501 सुंदर विहार
नई दिल्ली
दिनांक .....

पूज्य मामा जी
सादर प्रणाम

मेरे जन्म दिन पर आपके द्वारा भेजा गया बधाई संदेश तथा एक सुंदर हाथ-घड़ी का उपहार मिला। आपके द्वारा भेजा गया यह उपहार मेरे सभी मित्रों एवं सहपाठियों को भी काफ़ी पसंद आया। मैं तो आशा कर रहा था कि इस बार आप मेरे जन्म-दिन पर स्वयं उपस्थित होकर मुझे स्नेह आशीर्वाद देंगे, परंतु किसी कारण आप न आ सके। जब आपको उपहार प्राप्त हुआ, तो मेरी सारी शिकायत दूर हो गई और आपके प्रति कृतज्ञता से भर गया। आपके द्वारा भेजा गया उपहार मुझे आपके स्नेह का स्मरण कराता रहेगा।

इतने सुंदर उपहार के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। आदरणीय मामा जी को सादर प्रणाम, ओजस्व को स्नेह।

आपका भानजा
क ख ग

* विज्ञापन तैयार कीजिए।

1) समीर ए०सी०. बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

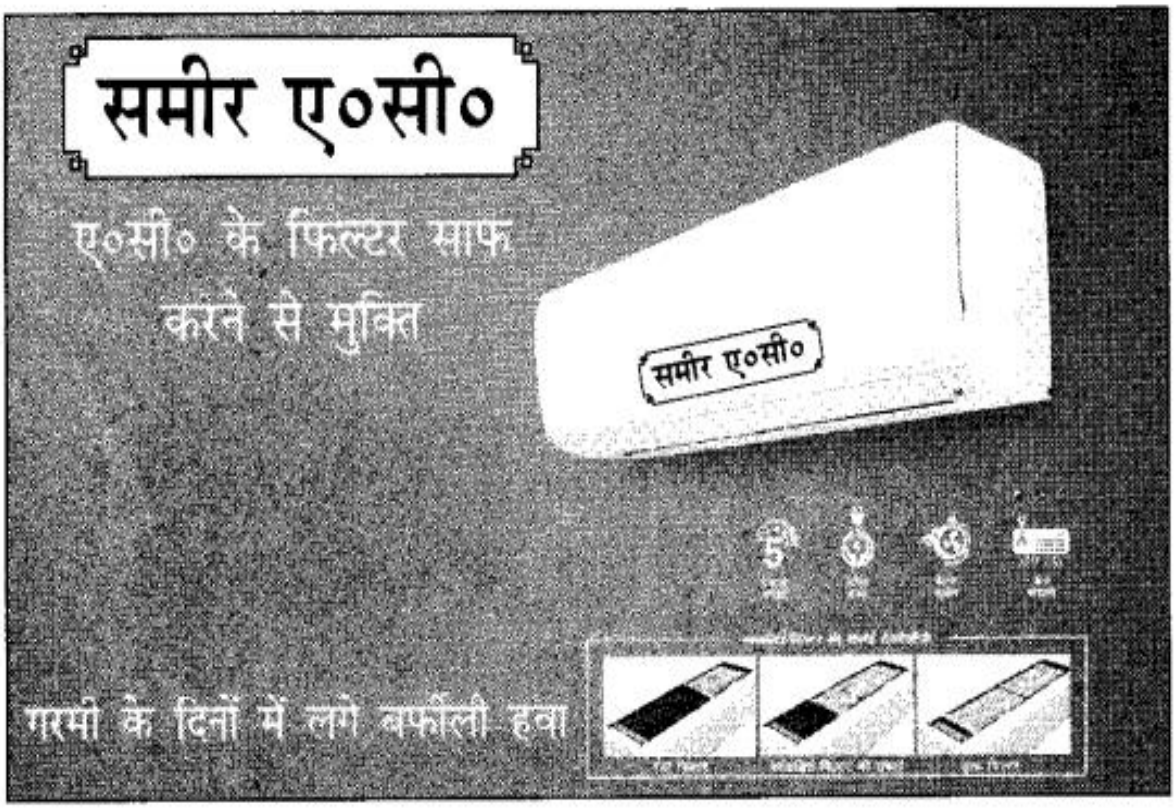

2) पूजा' धूप एवं अगरबत्तियाँ बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

3) 'केश पुकार' तेल बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

* संवाद लेखन

1) पिता और पुत्र में वार्तालाप

पिता- बेटे अतुल, कैसा रहा तुम्हारा परीक्षाफल ?
पुत्र- बहुत अच्छा नहीं रहा, पिताजी।
पिता- क्यों ? बताओ तो कितने अंक आए हैं ?
पुत्र- हिन्दी में सत्तर, अंग्रेजी में बासठ, कामर्स में अस्सी, अर्थशास्त्र में बहत्तर.....
पिता- अंग्रेजी में इस बार इतने कम अंक क्यों हैं ? कोई प्रश्न छूट गया था ?
पुत्र- पूरा तो नहीं छूटा ..... सबसे अंत में 'ऐस्से' लिखा था, वह अधूरा रह गया।
पिता- तभी तो..... । अलग-अलग प्रश्नों के समय निर्धारित कर लिया करो, तो यह नौबत नहीं आएगी। खैर, गणित तो रह ही गया।
पुत्र- गणित का पर्चा अच्छा नहीं हुआ था। उसमें केवल पचास अंक आए हैं।
पिता- यह तो बहुत खराब बात है। गणित से ही उच्च श्रेणी लाने में सहायता मिलती है।
पुत्र- पता नहीं क्या हुआ, पिताजी। एक प्रश्न तो मुझे आता ही नहीं था। शायद पाठ्यक्रम से बाहर का था।
पिता- एक प्रश्न न करने से इतने कम अंक तो नहीं आने चाहिए।
पुत्र- एक और प्रश्न बहुत कठिन था। उसमें शुरू से ही ऐसी गड़बड़ी हुई कि सारा प्रश्न गलत हो गया।
पिता- अन्य छात्रों की क्या स्थिति है ?
पुत्र- बहुत अच्छे अंक तो किसी के भी नहीं आए पर मुझसे कई छात्र आगे हैं।
पिता- सब अभ्यास की बात है बेटे ! सुना नहीं 'करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।' तुम तो स्वयं समझदार हो। अब वार्षिक परीक्षाएँ निकट है। दूरदर्शन और खेल का समय कुछ कम करके उसे पढ़ाई में लगाओ।
पुत्र- जी पिताजी ! मैं कोशिश करूँगा कि अगली बार गणित में पूरे अंक लाऊँ।
पिता- मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

2)बढ़ती महँगाई को लेकर दो नागरिकों की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

हरिप्रसाद – अरे पंकज क्या लाए हो बाजार से?
पंकज – जी, अंकल ज्यादा कुछ नहीं, बस थोड़ी सी दालें और चावल ही लाया हूँ।
हरिप्रसाद – अब इस बढ़ती महँगाई ने तो सबका हाथ ही तंग कर दिया है।
पंकज – कुछ न पूछिए! सभी चीजों के दाम आसमान को छू रहे हैं, कोई भी चीज सस्ती नहीं है। कुछ दालों के तो 200 रुपए किलो तक पहुँच गए हैं।
हरिप्रसाद – दालें ही क्या सभी चीजें इतनी महँगी हो गई हैं कि वे आम आदमी की पहुँच से बाहर होती जा रही हैं।
पंकज – पर मेरी एक बात समझ में नहीं आती। महँगाई को रोकने के लिए सरकार क्यों कुछ नहीं कर रही है?
हरिप्रसाद – अरे भैया! मुझे तो लगता है दाल में कुछ काला है। वरना सरकार चाहे तो क्या कुछ नहीं कर सकती। महँगाई के खिलाफ़ कानून बना सकती है। चीजों के दाम तय कर सकती है।
पंकज – यही नहीं, उचित दाम से अधिक मूल्य वसूलने वालों को धर पकड़ भी सकती है।
हरिप्रसाद – हाँ, सरकार आए दिन कुछ न कुछ बयान अवश्य देती है। कभी वायदे करती है, कभी योजनाएँ बनाती है, पर न तो वे वायदे कभी पूरे होते हैं और न ही वे योजनाएँ।
पंकज – आश्चर्य की बात यह है कि विपक्षी पार्टियाँ भी सरकार पर दबाव डालने के लिए कुछ नहीं कर रही हैं।

3) महारानी और सेविकाओ के बीच का संवाद लिखिए |

महारानी: (एक सेविका से) मालिन कहाँ है? जरा बुला तो सही, उस मालिन की बच्ची को।
मालिन: (डरती हुई सेविका के साथ महारानी के चरणों में शीश नवाते हुए) आदेश हो महारानी।
महारानी: अरी तू मालिन है कि नागिन?
मालिन: जो भी हूँ हुजूर की सेविका हूँ, राजमाता! महारानी : सेविका नहीं है तू, जान की दुश्मन है हमारी।
मालिन: हे भगवान, हे भगवान यह क्या कह रही हैं राजमाता! मेरा अपराध तो बताइए।
महारानी: अब अपराध पूछ रही है। चोरी और सीना जोरी। देख हमारे शरीर पर नील पड़ गए हैं। हम रातभर सो नहीं सके।
एक सेविका: ऐसा क्यों हुआ राजमाता!
दूसरी सेविका: ऐसा क्यों हुआ राजमाता!
तीसरी सेविका: स्वास्थ्य तो ठीक है राजमाता का?
चौथी सेविका: कोई चिंता तो नहीं राजमाता आपको?
महारानी: अरी, चिंता-विंता नहीं। इस मालिन के कारण हम रात-भर सो नहीं सके। करवट-पर-करवट बदलते रहे। जगह-जगह से हमारी छाल छिल गई है।
मालिन: क्षमा माँगती हूँ राजमाता! क्षमा माँगती हूँ।
एक सेविका: क्या मालिन फूलों की सेज सजाना भूल गई थी राजमाता?
महारानी: नहीं, यह निर्दयी फूलों की सेज लगाना तो नहीं भूली पर ऐसे फूल चुनकर लाई, जिनसे हमारे सारे शरीर पर नील पड़ गए।

* चित्र वर्णन कीजिए।

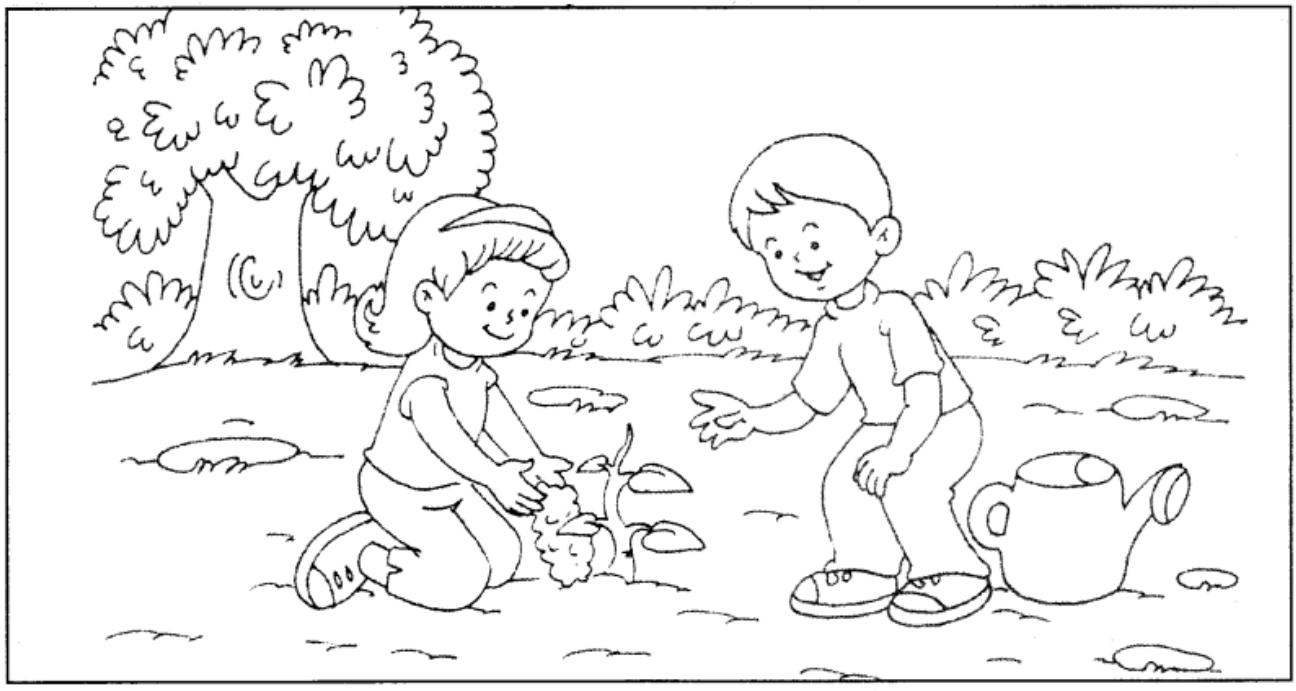

यह चित्र वृक्षारोपण का है। पर्यावरण के प्रति सजग कुछ बच्चों ने पार्क को हरा-भरा बनाने का जिम्मा उठाया है। इनके इस कार्य में प्रकृति भी उनका साथ दे रही है। बच्चे पौधों को लगाने के साथ उनकी रक्षा के लिए कटिबद्ध हैं। सरकार ने कई राज्यों में राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य स्थापित किये हैं। वर संरक्षण के लिये बहुत अधिक प्रयास किये जा रहे हैं। विद्यालयों में भी इसको प्रोत्साहित करने के लिए बच्चों से वृक्ष लगवाये जाते हैं। सरकार ने वनों की रक्षा के लिये कड़े कदम उठाये हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वन महोत्सव कार्यक्रम चलाया गया था। आज भी हरे भरे पेड़ों को काटना कानूनन अपराध है। 'हर जन्मदिन पर एक वृक्ष लगायें, भारत को हरा भरा बनायें' जैसे नारे दिये जा रहे हैं।

चित्र वर्णन कीजिए।

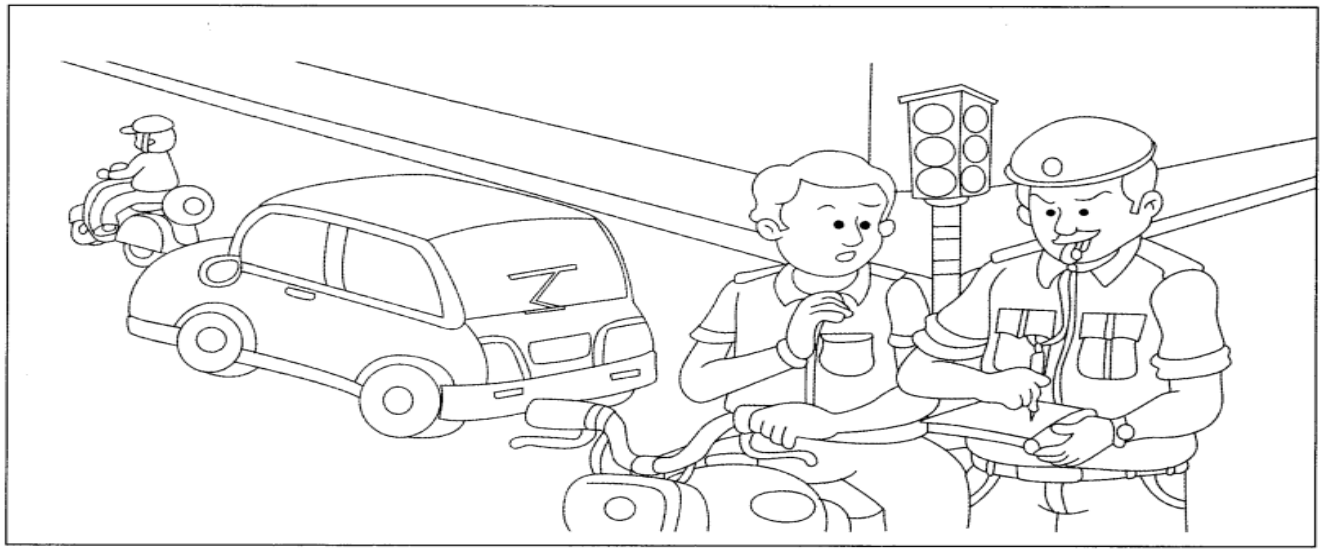

इस चित्र में कोई युवक बिना हेलमेट लगाए मोटरसाइकिल चला रहा है। उसने लालबत्ती की परवाह नहीं की और बिना रुके चौराहा पार कर गया। सड़क सुरक्षा कानून का इस तरह उल्लंघन करने के कारण ट्रैफिक पुलिस वाला उसका चालान काट रहा है। युवक आनाकानी कर रहा है | ट्रैफिक पुलिसवाला उसे डांट लगा रहा है | रास्ते मे बहुत से वाहनों की अवर -जवर हो रही है| युवक ने चालान के पैसे दिए और वहाँ से चला गया |

व्याकरण-विभाग

1) विरामचिह्न

हिंदी में विराम चिह्न बहुत महत्वपूर्ण है विराम चिह्न का उपयोग लिखनेके समय उपयोग किया जाता है यह वाक्य के प्रकार और उसके स्थान के बारे मे भी जानकारी देता हैं। विराम चिह्न वाक्य के अनुसार बदलते है।

दुसरे शब्दो मे यह कह सकते है कि भाषा में स्थान -विशेष पर रुकने अथवा उतार -चढ़ाव आदि दिखाने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उन्हें ही ' विराम चिन्ह ' कहते है-

1) पूर्ण विराम (।) (Full Stop)

2) अल्प विराम (,) (Comma)

3) अर्ध विराम (;) (Semicolon)

4) प्रशनवाचक चिन्ह (?) (Question Mark)

5) विस्मयादिवाचक चिन्ह (!) (Exclamation Mark)

6) निर्देशक (—) (Dash)

7) योजक (-) (Hyphen)

8) उद्धरण चिन्ह (" ") (Quotation Mark)

9) विवरण चिन्ह (:-) (Sign of Following)

*** निम्नलिखित विराम-चिहनों के नाम लिखिए।**

1) (-)- रेखांकन चिहन
2) (।)- पूर्ण विराम
3) (:)- उपविराम
4) (-)- योजक चिहन
5) (" ")- उदधरण चिहन
6) (०)- लाघव चिहन
7) (;)- अर्धविराम
8) (,)- अलप विराम
9) (?)- प्रश्नसूचक चिहन
10) (!)- विस्मयादिबोधक चिहन
11) (())- कोष्ठक चिहन

2) मुहावरा की परिभाषा

ऐसे वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, मुहावरा कहलाता है।

साधारण अर्थ में - मुहावरा किसी भाषा में आने वाला वह वाक्यांश है, जो अपने शाब्दिक अर्थ को न बताकर किसी विशेष अर्थ को बताता है।

1)**अँगारे बरसना-** अत्यधिक गर्मी पड़ना।
- जून मास की दोपहरी में अंगारे बरसते प्रतीत होते हैं।

2)**गारों पर पैर रखना-** कठिन कार्य करना।
- युद्ध के मैदान में हमारे सैनिकों ने अंगारों पर पैर रखकर विजय प्राप्त की।

3)**अँगारे सिर पर धरना**- विपत्ति मोल लेना।
- सोच-समझकर काम करना चाहिए। उससे झगड़ा लेकर व्यर्थ ही अंगारे सिर पर मत धरो।

4)**अँगूठा चूसना-** बड़े होकर भी बच्चों की तरह नासमझी की बात करना।
- कभी तो समझदारी की बात किया करो। कब तक अंगूठा चूसते रहोगे?

5)**आस्तीन का साँप-** कपटी मित्र।
- प्रदीप से अपनी व्यक्तिगत बात मत कहना, वह आस्तीन का साँप है; क्योंकि आपकी सभी बातें वह अध्यापक महोदय को बता देता है।

6)**कान भरना-** चुगली करना।
- मोहन ने सोहन से कहा कि आज साहब नाराज हैं, किसी ने उनके कान भरे हैं।

7)**गाल बजाना-** डींग मारना।
- केवल गाल बजाने से सफलता नहीं मिल सकती, इसके लिए परिश्रम भी परम आवश्यक है।

8)**घी के दीये जलाना-** खुशी मनाना।
- अपने प्रतिद्वन्द्वी की हार पर सुनील ने घी के दीये जलाए।

9)**जी-जान लड़ाना-** बहुत परिश्रम करना।
- हमने तो कार्यक्रम की सफलता के लिए जी-जान लड़ा दी, किन्तु उन्हें कोई बात पसन्द ही नहीं आती।

10)**दंग रह जाना**- आश्चर्यचकित होना।
- बाबा के चमत्कारों को देखकर मैं तो दंग रह गया।

11)**दाँत खट्टे करना–** हरा देना।
- भारतीय सैनिकों ने कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।

12)**पानी फेर देना–** निराश कर देना।
- अनमोल ने विद्यालय छोड़कर अपने पिता की उम्मीदों पर पानी फेर दिया।

13)**बाँछे खिल जाना–** प्रसन्नता से भर उठना।।
- अपनी प्रोन्नति का समाचार सुनकर शशांक की बाँछे खिल गईं।

14)**हवा से बातें करना–** बहुत तेज गति से दौड़ना।
- चेतक राणा के सवार होते ही हवा से बातें करने लगता था।

15)**होश उड़ जाना**- घबरा जाना।
- सामने से शेर को आता देखकर शिकारी के होश उड़ गए।

3) उपसर्ग की परिभाषा

उपसर्ग उस शब्दांश या अव्यय को कहते है, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है।

दूसरे शब्दों में– ''उपसर्ग वह शब्दांश या अव्यय है, जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में मूल शब्द के अर्थ में विशेषता ला दे या उसका अर्थ ही बदल दे।'' वे उपसर्ग कहलाते है।

अन	–	अनमोल, अलग, अनजान, अनकहा, अनदेखा इत्यादि।
अध्	–	अधजला, अधखिला, अधपका, अधकचरा, अधकच्चा, अधमरा इत्यादि।
उन	–	उनतीस, उनचास, उनसठ, इत्यादि।
भर	–	भरपेट, भरपूर, भरदिन इत्यादि।
दु	–	दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुकाल इत्यादि।
नि	–	निगोड़ा, निडर, निकम्मा इत्यादि।

अ - अनजान , अछूत , अथाह , अचेत
औ - औसर , औरत, औरंग
कु - कुमार , कुपुत्र , कुशल , कुम्हार

4) प्रत्यय की परिभाषा

जो शब्दांश, शब्दों के अंत में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाये, प्रत्यय कहलाते है।

दूसरे अर्थ में- शब्द निर्माण के लिए शब्दों के अंत में जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय दो शब्दों से बना है- प्रति+अय। 'प्रति' का अर्थ 'साथ में, 'पर बाद में' है और 'अय' का अर्थ 'चलनेवाला' है। अतएव, 'प्रत्यय' का अर्थ है 'शब्दों के साथ, पर बाद में चलनेवाला या लगनेवाला। प्रत्यय उपसर्गों की तरह अविकारी शब्दांश है, जो शब्दों के बाद जोड़े जाते है।

प्रत्यय	**कृदंत-रूप**
आऊ	टिकाऊ
आक	तैराक
आका	लड़का
आड़ी	खिलाड़ी
आलू	झगड़ालू
इया	बढ़िया
इयल	अड़ियल
इयल	मरियल
ऐत	लड़ैत
ऐया	बचैया
ओड़	हँसोड़
ओड़ा	भगोड़ा

5) कारक

कारक	विभक्ति या कारक चिह्न
1 कर्ता	ने
2. कर्म	को
3. करण	से, द्वारा
4.सम्प्रदान	को, के लिए

5. अपादान से

6. सम्बन्ध का, के, की, रा, रे, रो, ना, ने, नी

7. अधिकरण में, पर

8. सम्बोधन हे, हो, अरे, अजी, अहो आदि।

*** कर्ता कारक**

i) राम ने पत्र लिखा। (ii) हम कहाँ जा रहे हैं।

(iii) रमेश ने आम खाया। (iv) सोहन किताब पढ़ता है।

(v) राजेन्द्र ने पत्र लिखा। (vi) अध्यापक ने विद्यार्थियों को पढ़ाया।

(vii) पुजारी जी पूजा कर रहे हैं। (viii) कृष्ण ने सुदामा की सहायता की।

*** कर्म कारक**

जैसे –

(i) अध्यापक , छात्र को पीटता है। (ii) सीता फल खाती है।

(iii) ममता सितार बजा रही है। (iv) राम ने रावण को मारा।

(v) गोपाल ने राधा को बुलाया। (vi) मेरे द्वारा यह काम हुआ।

(vii) कृष्ण ने कंस को मारा। (viii) राम को बुलाओ।

(ix) बड़ों को सम्मान दो। (x) माँ बच्चे को सुला रही है।

(xi) उसने पत्र लिखा।

*** करण कारक**

जैसे –

(i) बच्चे गेंद से खेल रहे हैं। (ii) बच्चा बोतल से दूध पीता है।

(iii) राम ने रावण को बाण से मारा। (iv) सुनील पुस्तक से कहानी पढ़ता है।

(v) कलम से पत्र लिख है।

*** संप्रदान कारक–**

(i) गरीबों को खाना दो। (ii) मेरे लिए दूध लेकर आओ।

(iii) माँ बेटे के लिए सेब लायी। (iv) अमन ने श्याम को गाड़ी दी।

(v) मैं सूरज के लिए चाय बना रहा हूँ। (vii) भूखे के लिए रोटी लाओ।

(viii) वे मेरे लिए उपहार लाये हैं। (ix) सोहन रमेश को पुस्तक देता है।

*** अपादान कारक**

(i) पेड़ से आम गिरा। (ii) हाथ से छड़ी गिर गई।

(iii) सुरेश शेर से डरता है। (iv) गंगा हिमालय से निकलती है।

(v) लड़का छत से गिरा है। (vi) पेड़ से पत्ते गिरे।

(vii) आसमान से बूँदें गिरी। (viii) वह साँप से डरता है।

(ix) दूल्हा घोड़े से गिर पड़ा।
(x) चूहा बिल से बाहर निकला।
(xi) पृथ्वी सूर्य से दूर है।

*** संबंध कारक**

जैसे -

(i) सीतापुर, मोहन का गाँव है।
(ii) सेना के जवान आ रहे हैं।
(iii) यह सुरेश का भाई है।
(iv) यह सुनील की किताब है।
(v) राम का लड़का, श्याम की लडकी, गीता के बच्चे।
(vi) राजा दशरथ का बड़ा बेटा राम था।
(vii) लड़के का सिर दुःख रहा है।

*** अधिकरण कारक**

जैसे -

(i) हरी घर में है।
(ii) पुस्तक मेज पर है।
(iii) पानी में मछली रहती है।
(iv) फ्रिज में सेब रखा है।
(v) कमरे में अंदर क्या है।
(vi) कुर्सी आँगन में बिछा दो।
(vii) महल में दीपक जल रहा है।
(viii) मुझमें शक्ति बहुत कम है।
(ix) रमा ने पुस्तक मेज पर रखी।
(x) कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था।
(xi) तुम्हारे घर पर चार आदमी है।
(xii) उस कमरे में चार चोर हैं।

*** संबोधन कारक**

जैसे –

(i) हे ईश्वर ! रक्षा करो।
(ii) अरे ! बच्चो शोर मत करो।
(iii) हे प्रभु ! यह क्या हो गया।
(iv) अरे भाई ! यहाँ आओ।
(v) अजी ! तुम उसे क्या मारोगे ?
(vi) बाबूजी ! आप यहाँ बैठें।
(vii) अरे मुकेश ! जरा इधर आना।
(viii) अरे ! आप आ गये।

समास

1. द्वन्द्व समास

- माता-पिता
- भाई-बहन
- सुख-दुःख
- ऊँचा – नीचा

राम-कृष्ण
पाप-पुण्य
राजा- रंक
भला- बुरा

2. द्विगु समास

- नवरत्न
- त्रिभुवन
- त्रिफला
- शताब्दी

सप्तदीप
सतमंजिल
पंचवटी
सप्ताह

3. तत्पुरुष समास

मतदाता

- जन्मजात
- गुणहीन
- सत्याग्रह
- भयभीत
- प्रेमसागर
- भारतरत्न
- आत्मविश्वास

गिरहकट
मुँहमाँगा
हथकड़ी
धनहीन
जन्मान्ध
दिनचर्या
नीतिनिपुण
घुड़सवार

4. कर्मधारय समास

- कालीमिर्च
- पीताम्बर
- सद्गुण
- नीलगाय
- नीलकंठ

नीलकमल
चन्द्रमुखी
महाराजा
भलामानस
नीलांबर

5. अव्ययीभाव समास

यथास्थान
प्रतिदिन
भरपेट
निडर
हाथोंहाथ
यथामति

आजीवन
यथासमय
आमरण
दिनोंदिन
प्रतिदिन
भरसक

6. बहुव्रीहि समास

- महात्मा
- लम्बोदर
- चक्रधर
- चतुर्भूर्ज
- नीलकंठ

नीलकण्ठ
गिरिधर
चन्द्रशेखर
दशानन
त्रिनेत्र

वाक्य

* वाक्यों को पहचानकर उनके भेद के नाम लिखिए।

1. वाक्यों का वर्गीकरण कितने आधारों पर किया गया है?

(a) दो (b) तीन (c) चार (d) पाँच

उत्तर : (a) दो

2. जिन वाक्यों में एक उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, उसे कहते हैं

(a) एकल वाक्य (b) सरल वाक्य (c) मिश्र वाक्य (d) संयुक्त वाक्य

उत्तर : (b) सरल वाक्य

3. मिश्र वाक्य कहते हैं

(a) जिनमें एक कर्ता और एक ही क्रिया होती है

(b) जिनमें एक से अधिक प्रधान उपवाक्य हों और वे संयोजक अव्यय द्वारा जुड़े हों

(c) जिनमें एक साधारण वाक्य तथा उसके अधीन दूसरा उपवाक्य हो

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : (c) जिनमें एक साधारण वाक्य तथा उसके अधीन दूसरा उपवाक्य हो

4. जिन वाक्यों में एक-से-अधिक प्रधान उपवाक्य हों और वे संयोजक अव्यय द्वारा जुड़े हों, उसे कहते हैं-

(a) विधिवाचक (b) सरल वाक्य (c) मिश्र वाक्य (d) संयुक्त वाक्य

उत्तर : (d) संयुक्त वाक्य

5. वाक्य के गुणों में सम्मिलित नहीं है

(a) लयबद्धता (b) सार्थकता (c) क्रमबद्धता (d) आकांक्षा

उत्तर : (a) लयबद्धता

6. अर्थ के आधार पर वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?

(a) आठ (b) दस (c) तीन (d) चार

उत्तर : (a) आठ

7. जिन वाक्यों से किसी कार्य या बात करने का बोध होता है, उन्हें कहते हैं

(a) आज्ञावाचक (b) विधानवाचक (c) इच्छावाचक (d) संकेतवाचक

उत्तर : (b) विधानवाचक

8. रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं?

(a) चार (b) तीन ✔ (c) पाँच (d) दो

9. ''समाचार पत्र में अनोखी घटना छपी है'', इस वाक्य में विधेय क्या है? सही विकल्प पर निशान लगाएँ?

(a) घटना छपी है (b) पत्र में

(c) अनोखी घटना छपी है ✔ (d) में छपी है

10. निम्नलिखित वाक्य का अर्थ की दृष्टि से प्रकार बताइए-

'वर्षा होती, तो फसल अच्छी होती'

(a) इच्छावाचक वाक्य (b) संदेहवाचक वाक्य

(c) संकेतवाचक वाक्य ✔ (d) प्रश्नवाचक वाक्य

11. निम्न में से मिश्र वाक्य का चयन कीजिए-

(a) रोहन आम खा रहा है

(b) वह पंडित है, किन्तु हठी है

(c) आकाश में बादल गरजते है

(द) वह कौन-सा व्यक्ति है, जिसने महात्मा गाँधी का नाम न सुना हो ✔

12 'जब तक वह घर पहुँचा तब तक उसके पिताजी जा चुके थे।' वाक्य है-

(a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य

(c) मिश्र वाक्य ✔ (d) इनमें से कोई नहीं

13. जिन वाक्य में सामान्य रूप से किसी कार्य के होने या करने का बोध होता है, उसे क्या कहते हैं?

(a) निषेधार्थक वाक्य (b) विधानार्थक वाक्य ✔

(c) आज्ञार्थक वाक्य (d) संकेतार्थक वाक्य

14. निम्न में से सरल वाक्य का चयन कीजिए-

(a) उसने कहा कि कार्यालय बंद हो गया

(b) सुबह हुई और वह आ गया

(c) राहुल धीरे-धीरे लिखता है ✔

(d) जो बडे है, उन्हें सम्मान दो

15. 'गुरुजन का सम्मान करना सीखो' किस प्रकार का वाक्य है?

(a) आज्ञार्थक ✔ (b) संकेतवाचक

(c) संदेहवाचक (d) इच्छार्थक

16. यदि हम गवाही दे दें तो काम न बन जाए' किस प्रकार का वाक्य है?

(a) इच्छावाचक (b) संकेतवाचक ✔

(c) संदेहवाचक (d) आज्ञार्थक

17. 'भगवान करे तुम्हारी नौकरी लग जाए' यह किस प्रकार का वाक्य है?

(a) इच्छावाचक ✔ (b) प्रश्नवाचक

(c) संकेतवाचक (d) विधानार्थक

18 . 'झूठ मत बोलो' यह किस प्रकार का वाक्य है?

(a) प्रश्नवाचक (b) नकारात्मक

(c) निषेधवाचक ✔ (d) विधिवाचक

19. 'सरल' या 'साधारण' वाक्य किसे कहते हैं?

(a) जो छोटा हो

(b) जिसका अर्थ सरलता से समझ में आ जाए

(c) जिसमें एक कर्ता और अनेक क्रियाएँ हो

(d) जिसमें एक उद्देश्य, एक विधेय और एक ही क्रिया हो ✔

20. मोहन बाजार जा रहा है, इस वाक्य में उद्देश्य है-

(a) मोहन ✔ (b) खरीददारी

(c) घूमना (d) बाजार

21. राम मेरा मित्र नहीं है। अर्थ के आधार पर वाक्य का प्रकार है-

(a) विधानार्थक (b) निषेधार्थक ✔

(c) प्रश्नवाचक (d) आज्ञावाचक

22 . 'अंजना रवि की बहिन है जो अशोक विहार में रहती है।' रचना के आधार पर वाक्य है-

(a) सरल (b) मिश्र ✔

(c) संयुक्त (d)इनमें से कोई नहीं

23 'तेंदुलकर ने एक ओवर में पाँच छक्के लगाए' इस वाक्य में उद्देश्य है-

(a) छक्के (b) तेंदुलकर ✔

(c) ओवर (d) पाँच

24. अर्जुन इतना वीर था कि उसे कोई हरा नहीं सका। वाक्य का उद्देश्य है-

(a) अर्जुन ✔ (b) इतना वीर था

(c) कि उसे कोई (d) हरा नहीं सका

25. निम्नलिखित में से 'इच्छार्थक' वाक्य है-

(a) सौरभ को बुलाओ (b) तुम्हारा मंगल हो ✔

(c) आज महाविद्यालय में अवकाश है (d) तुमने सुना होगा

26. 'एक गिलास पानी लाओ।' अर्थ के आधार पर वाक्य है-

(a) निषेधवाचक (b) आज्ञावाचक ✔

(c) इच्छा वाचक (d) संदेह वाचक

27. 'अब तक वह सो गया होगा।' अर्थ के आधार पर वाक्य है-

(a) आज्ञावाचक (b) इच्छावाचक

(c) संदेहवाचक ✔ (d) संकेतवाचक

28. 'अब तक वह सो गया होगा।' अर्थ के आधार पर वाक्य है-

(a) आज्ञावाचक (b) इच्छावाचक

(c) संदेहवाचक ✔ (d) संकेतवाचक

शब्द – सन्धि – विच्छेद

1- राष्ट्राध्यक्ष – राष्ट्र + अध्यक्ष
2- नयनाभिराम – नयन + अभिराम
3- युगान्तर – युग + अन्तर
4- शरणार्थी – शरण + अर्थी
5-सत्यार्थी – सत्य + अर्थी
6- दिवसावसान – दिवस + अवसान
7- प्रसंगानुकूल – प्रसंग +अनुकूल
8- विद्यानुराग – विद्या + अनुराग
9- परमावश्यक – परम + आवश्यक
10- उदयाचल – उदय + अचल
11- ग्रामांचल – ग्रामा + अंचल
12- ध्वंसावशेष – ध्वंस + अवशेष
13- हस्तान्तरण – हस्त + अन्तरण
14- परमानन्द – परम + आनन्द
15- रत्नाकर – रत्न + आकर
16- देवालय – देव + आलय
17- धर्मात्मा – धर्म + आत्मा
18- आग्नेयास्त्र – आग्नेय + अस्त्र
19- मर्मान्तक – मर्म + अन्तक
20- रामायण – राम + अयन
21-सुखानुभूति – सुख + अनुभूति
22- आज्ञानुपालन – आज्ञा + अनुपालन
23-गीतांजलि – गीत + अंजलि
24- मात्राज्ञा – मातृ + आज्ञा
25-भयाकुल – भय + आकुल

- **क्रियाविशेषण पहचान के उनके प्रकार के नाम लिखिए|**

1-मैं अभी आ रहा हूं।- कालवाचक क्रियाविशेषण
2- वह संभवत चला गया है | - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
3 -फिर कभी चलेंगे। - कालवाचक क्रियाविशेषण
4- जिधर देखो पानी ही पानी है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
5- मैं प्रात:काल उठ जाता हूँ | - कालवाचक क्रियाविशेषण
6 -पानी निरंतर बह रहा है। - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
7-भीतर जाकर बैठिए|- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
8- भाई अवश्य आएगा|- रीतिवाचक क्रियाविशेषण
9- वह सवेरे टहलने जाता है |- कालवाचक क्रियाविशेषण
10- यहां से चले जाइए।- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
11- अधिक खेलना ठीक नहीं |- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
12- किधर जा रहे हो |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
13- मेरा घर इस ओर है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
14- थोड़ा थोड़ा अभ्यास कीजिए |- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
15- वह अधिक बोलता है|- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
16- दिन जल्दी जल्दी ढलता है।- रीतिवाचक क्रियाविशेषण
17- वह बाहर खड़ा है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
18- संभव है कि वह आए|- - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
19- वह मेरे घर बहुधा आता है |- कालवाचक क्रियाविशेषण
20- धीरे-धीरे चलिए |- रीतिवाचक क्रियाविशेषण

साहित्य-विभाग

*** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

1) कहानी में "मोटे-मोटे किस काम के हैं" ?किन के बारे में और क्यों कहा गया?

उ- कहानी में "मोटे-मोटे किस काम के हैं" बच्चों के बारे में कहा गया है क्योंकि वे घरके कामकाज में जरा सी भी मदद नहीं करते थे तथा दिन भर खेलते-कूदते रहते थे।

2) बच्चों के उधम मचाने के कारण घर कि क्या दुर्दशा हुई?

उ- बच्चों के उधम मचाने से घर की सारी व्यवस्था ख़राब हो गई। मटके-सुराहियाँ इधर-उधर लुढक गए। घर के सारे बर्तन अस्त-व्यस्त हो गए। पशु-पक्षी इधर-उधर भागने लगे। घर में धुल, मिट्टी और कीचड़ का ढेर लग गया। मटर की सब्जी बनने से पहले भेड़ें खा गई। मुर्गे-मुर्गियों के कारण कपड़े गंदे हो गए।

3) "या तो बच्चा राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। "अम्मा ये कब कहा और इसका परिणाम क्या हुआ?

उ- अम्मा ने बच्चों द्वारा किए गए घर की हालत को देखकर ऐसा कहा था। जब पिताजी ने बच्चों को घर के काम काज में हाथ बँटाने की नसीहत दी तब उन्होंने किया इसके विपरीत सारे घर को तहस-नहस किया। चारों तरफ़ समान बिखरा दिया, मुर्गियों और भेड़ों को घर में घुसा दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि काम करने के बजाए उन्होंने घर का काम कई गुना बढ़ा दिया जिससे अम्मा जी बहुत परेशान हो गई थीं। उन्होंने पिताजी को साफ़-साफ़ कह दिया कि या तो बच्चों से करवा लो या मैं मायके चली जाती हूँ। इसका परिणाम ये हुआ कि पिताजी ने घर की किसी भी चीज़ को बच्चों को हाथ ना लगाने की हिदायत दे डाली नहीं तो सज़ा के लिए तैयार रहने को कहा।

4)"कामचोर "कहानी क्या संदेश देती है?

उ- यह एक हास्यप्रधान कहानी है। यह कहानी संदेश देती है की बच्चों को उनके स्वभाव के अनुसार, उम्र और रूचि ध्यान में रखते हुए काम करना चाहिए। जिससे वे बचपन से ही रचनात्मक कार्यों में लगन तथा रूचि का परिचय दे सकें। उनके ऊपर बड़ों की जिम्मेदारी थोपना बचपन को कुचलना है। अतः बड़ों को चाहिए की समझदार बच्चा बनकर बच्चों के बीच रहें और उन्हें सही दिशा प्रदान करें।

5) सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई?

उत्तर- सुदामा की हालत देखकर श्रीकृष्ण को बहुत दुख हुआ। दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले कि उन्ही आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

6). "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।" पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत दोहे में यह कहा गया है कि जब सुदामा दीन-हीन अवस्था में कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण उन्हें देखकर व्यथित हो उठे। श्रीकृष्ण ने सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मँगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर श्रीकृष्ण को इतना कष्ट हुआ कि वे स्वयं रो पड़े और उनके आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए। अर्थात् परात में लाया गया जल व्यर्थ हो गया।

7) अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्या-क्या विचार आए? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- द्वारका से लौटकर सुदामा जब अपने गाँव वापस आएँ तो अपनी झोंपड़ी के स्थान पर बड़े-बड़े भव्य महलों को देखकर सबसे पहले तो उनका मन भ्रमित हो गया कि कहीं मैं घूम फिर कर वापस द्वारका ही तो नहीं चला आया। फिर भी उन्होंने पूरा गाँव छानते हुए सबसे पूछा लेकिन उन्हें अपनी झोंपड़ी नहीं मिली।

8) निर्धनता के बाद मिलने वाली संपन्नता का चित्रण कविता की अंतिम पंक्तियों में वर्णित है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- निर्धनता के बाद श्रीकृष्ण की कृपा से सुदामा को धन-सम्पदा मिलती है। जहाँ सुदामा की टूटी-फूटी सी झोंपड़ी हुआ करती थी, वहाँ अब स्वर्ण भवन शोभित है। कहाँ पहले पैरों में पहनने के लिए चप्पल तक नहीं थी और अब पैरों से चलने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि अब घूमने के लिए हाथी घोड़े हैं, पहले सोने के लिए केवल यह कठोर भूमि थी और आज कोमल सेज पर नींद नहीं आती है, कहाँ पहले खाने के लिए चावल भी नहीं मिलते थे और आज प्रभु की कृपा से खाने को किशमिश-मुनक्का भी उप्लब्ध हैं। परन्तु वे अच्छे नहीं लगते।

9)"उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई-न-कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं"आपके विचार से "जंजीरों" द्वारा किन समस्याओं की ओर इशारा कर रहा है?

उत्तर- "जंजीरों" द्वारा समाज में फैली हुई रुढियों और संकीर्णता की ओर संकेत कर रहे हैं। हमारे पुरुष प्रधान समाज में नारी को हमेशा से दबना पड़ा है। पर जब वह दमित नारी कुछ करने की ठानती है तो ये जंजीरे कटने लगती हैं। जैसे- स्त्री की आज़ादी और साक्षरता।

10) शुरूआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आर-साइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन किया, क्यों?

उत्तर- शुरूआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आर-साइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन किया, क्योंकि आर-साइकिल्स के मालिक की आय में वृद्धि हो रही थी। यहाँ तक की लेडीज़ साइकिल कम होने से महिलाऐ जेंट्स साइकिल भी खरीद रही थी। आर-साइकिल्स के मालिक ने आंदोलन का समर्थन स्वार्थवश किया।

11) साइकिल चलाने से फातिमा और पुडुकोट्टई की महिलाओं को 'आज़ादी' का अनुभव क्यों होता होगा?

उत्तर:- फातिमा के गाँव में पुरानी रूढ़िवादी परम्पराएँ थीं। वहाँ औरतों का साइकिल चलाना उचित नहीं माना जाता था। इन रुढियों के बंधनों को तोड़कर स्वयं को पुरुषों की बराबरी का दर्जा देकर फातिमा और पुडुकोट्टई की महिलाओं को 'आज़ादी' का अनुभव होता होगा।

12)बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था?

उत्तर- बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध अपनी पत्नी के संदूक से चोरी करके निकाल कर किया था। यद्यपि चाबी उसकी पत्नी की सोने की चेन में बँधी रहती थी, पर उन्होंने चुपचाप उसे उतार कर ताली से संदूक खोल लिया था और रुपए निकाल लिए थे। बाद में वे रुपए चुपचाप वहीं रख भी दिए। पत्नी कुछ न जान पाई।

13) आपके विचार में अंग्रेज ने वह पुराना लोटा क्यों खरीद लिया?

उत्तर- अंग्रेज पुरानी ऐतिहासिक महत्त्व की चीज़े खरीदने के शौकीन होते हैं। उस अंग्रेज का एक पड़ोसी मेजर डगलस पुरानी चीज़ों में उससे बाजी मारने का दावा करता रहता था। उसने एक दिन जहाँगीरी अंडा दिखाकर कहा था कि वह इसे दिल्ली से 300 रुपए में लाया है। वह लोटा अकबरी था ही नहीं, बिलवासी ने उसे मूर्ख बनाया था। इस लोटे को दिखाकर वह मेजर डगलस को नीचा दिखाना चाहता था और स्वंय को श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहता था।

14)मक्खन चुराते समय कृष्ण थोड़ा सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?

उत्तर- श्री कृष्ण बहुत छोटे थे और छींका बहुत ऊँचा था। जब वह छींका से मक्खन चोरी करते थे तो थोड़ा मक्खन इधर-उधर बिखर जाता था क्योंकि उनका हाथ छींके तक नही पहुँच पाता था। कृष्ण ऐसा जान-बूझकर भी करते थे ताकि उनकी चोरी पकड़ी जाए और माँ उनसे नाराज़ हो जाए तथा माँ को मनाने का अवसर मिले।

15)दोनों पदों में से आपको कौन सा पद अधिक पसंद आया और क्यों?

उत्तर- दोनों पदों में से मुझे पहला पद ज़्यादा पसंद आया ज्यों की सूरदास जी ने भक्तिरस में डूबकर बाल सुलभ व्यवहार का मनमोहक चित्र प्रस्तुत किया है। वात्सल्य रास की सुन्दर अभिव्यक्ति की है। बालक श्री कृष्ण का अपनी माँ से शिकायत करना बड़े सुन्दर ढंग से बताया गया है।

16)कृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?

उत्तर- कृष्ण अपनी चोटी के बारे में सोचते थे कि उनकी चोटी भी दूध पीने से बलराम भैया के जैसी लंबी-मोटी हो जाएगी। माता यशोदा हर रोज उन्हें पीने को दूध देती थी, फिर भी उनकी चोटी बढ़ नहीं रही थी।

17) **बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?**

उत्तर - माता यशोदा ने श्रीकृष्ण को बताया की दूध पीने से उनकी चोटी बलराम भैया की तरह हो जाएगी। श्रीकृष्ण अपनी चोटी बलराम जी की चोटी की तरह मोटी और बड़ी करना चाहते थे इस लोभ के कारण वे दूध पीने के लिए तैयार हुए।

18) दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौन-से खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं?

उत्तर - दूध की तुलना में श्रीकृष्ण को माखन-रोटी अधिक पसंद करते हैं।

19) 'तैं ही पूत अनोखी जायौ' – पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौन-से भाव मुखरित हो रहे हैं?

उत्तर - 'तैं ही पूत अनोखी जायौ' – पंक्तियों में ग्वालन के मन में यशोदा के लिए कृष्ण जैसा पुत्र पाने पर ईर्ष्या की भावना व कृष्ण के उनका माखन चुराने पर क्रोध के भाव मुखरित हो रहे हैं। इसलिए वह यशोदा माता को उलाहना दे रही हैं।

20) श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर - श्रीकृष्ण के पर्यायवाची शब्द – गोविन्द, रणछोड़, वासुदेव, मुरलीधर, नन्दलाल।

21) टोपी बनवाने के लिए गवरइया किस-किस के पास गई? टोपी बनने तक के एक-एक कार्य को लिखें।

उत्तर-टोपी बनवाने के लिये गवरइया पहले धुनिया के पास रुई धुनवाने के लिए गई, फिर वह कोरी के पास तकवाने के लिये गई, इसके बाद बुनकर के पास कपड़ा बुनवाने के लिये और अंत में दर्जी के पास टोपी सिलवाने के लिये गई। तब उसकी टोपी तैयार हुई।

22) गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने क्यों जड़ दिए?

उत्तर- गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने इसलिये जड़ दिए क्योंकि उसने दर्जी को मजदूरी के रूप में आधा कपड़ा दे दिया था। खुश होकर उसने टोपी को और सुन्दर बना दिया था।

भारत की खोज
पाठ- 4 से 9

1) सुलतान महमूद गजनी ने भारत पर कब आक्रमण किया?
उ 1000 ई के आसपास
2) शाहबुदीन कब दिल्ली की गददी पर बैठा?
उ 1192
3) औरंगजेब की मृत्यु कब हुई ?
उ 1707
4) राजा राममोहन राय किसके प्रवर्तक थे?
उ पत्रकारिता के
5) पहला अखबार कब और कौन - सी भाषा में लिखा गया?
उ 1818 अंग्रेजी में
6) भारतीय सेना ने कब बगावत की?
उ 1857 में
7) विवेकानंद ने किस मिशन की स्थापना की?
उ रामकृष्ण मिशन
8) बीसवी शताब्दी में कौन से दो व्यक्तित्व सामने आए?
उ गांधीजी और टैगोर ।
9) नए पूँजीवाद का भारत के किस ढ़ाँचे पर प्रभाव पड़ा?
उ-नए पूँजीवाद का भारत के आर्थिक ढ़ाँचे पर प्रभाव पड़ा।
10) अंग्रेजी शासन की धुरी किसे कहा जाता था?
उ- कलेक्टर या ज़िला मजिस्ट्रेट को शासन की धुरी कहा जाता था।
11) राजा राममोहन राय की पत्रकारिता का संबंध किससे था?
उ- राजा राममोहन राय की पत्रकारिता का संबंध मनुष्य के विचारों को जागरुक करने का था।
12) राजा राममोहन राय ने किसकी स्थापना की?
उ- राजा राममोहन राय ने " ब्रहम-समाज " की स्थापना की।
13) आर्य समाज का नारा क्या था?
उ- आर्य समाज का नारा " वेदों की ओर लौटो " था।
14) सर सैयद अहमद खाँ कौन थे?
उ- सर सैयद अहमद खाँ एक ऐसे नेता थे,जो यह सोचते थे कि ब्रिटिश सत्ता के सहयोग से वे मुसलमानों की स्थिति को सुधार सकते थे।
15) पंजाब में क्या लागू हुआ?
उ मार्शल लाँ
16) किसके नेतृत्व में कांगेस सक्रिय बनी?

उ गांधी जी के
17) गांधी जी मुलतः कैसे व्यक्ति थे?
उ धर्मप्राण
18) मिस्टर जिन्ना की माँग क्या थी?
उ भारत के दो राष्ट्र हो हिन्दू और मुसलमान
19) कग्रिस का विभाजन किन दो दलों में हुआ?
उ- कग्रिस का विभाजन 1) नरम दल और 2) गरम दल में हुआ।
20) मुस्लिम लीग के कर्णधार कौन थे?
उ- मुस्लिम लीग के कर्णधार मोहम्मद अली जिन्ना थे।
21) अंग्रेजो ने " मार्शल ली " कहाँ लागू किया?
उ- अंग्रेजो ने "मार्शल ली " पंजाब में लागू किया।
22) भारत में तनाव कब बढा?
उ- 1942 में
23) भारत छोड़ो प्रस्ताव कब और कहाँ हुआ?
उ मुंबई में 7,8 अगस्त 1942 को।
24) भारत के शहरों पर किस तरह के हमलों की संभावना थी?
उ- भारत के शहरों पर हवाई हमलों की संभावना बढ़ गई थी।
25)" भारत छोड़ो प्रस्ताव "पर किसने विचार प्रस्तुत किया था?
उ- अखिल भारतीय कांग्रेस ने " भारत छोड़ो प्रस्ताव "पर विचार प्रस्तुत किया।
26) किसके नेतृत्व में जन-आंदोलन शुरु करने की बात कही गई?
उ- गांधीजी के नेतृत्व में जन-आंदोलन शुरु करने की बात कही गई।
27) भारत की बीमारी क्या थी?
उ अकाल
28) भारत किससे बीमार था?
उ तन और मन दोनों से।
29) " अंतिम दौर-एक "पाठ के आधार पर कौन अपने ही देश में गुलाम हो गया?
क) इंग्लैड ख) भारत ग) अमेरिका घ) चीन
30) कौन अपने मूल और चरित्र दोनों ही रूपी में स्थाई रूप से विदेशी थे?
क) अंग्रेज ख) भारतीय ग) मराठा घ) चीनी
31) ब्रिटिश सरकार के कौन से दो विशेष महकमे थे?
क) जमीदार और किसान ख) पुलिस और जमीदार
ग) किसान और पुलिस घ) मालगुज़ारी और पुलिस
32) अंग्रेजी शासन काल में भारत ने किन क्षेत्रों में उन्नति की?
क) रेलगाड़ी ख) छापाखाना ग) डाकतार विभाग घ) उपर्युक्त सभी
33) 18 वीं शताब्दी में बंगाल में किस प्रभावशाली व्यक्तित्व का उदय हुआ?
क) राजा राममोहन राय ख) स्वामी दयानंद सरस्वती
ग) रामकृष्ण परमहंस घ) महात्मा गांधी

34) राजा राममोहन राय के व्यक्तित्व में किसका मेल था?
क) विचारों का ख) संस्कृति का ग) भावों का **घ) नवीन ज्ञान**

35) राजा राममोहन राय की मृत्यु किस देश में हुई थी?
क) भारत में ख) अमेरिका में ग) रूस में **घ) इंग्लैड में**

36) भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कब हुआ था?
क) 1825 में **ख) 1857 मे** ग) 1847 में घ) 1835 में

37) " आर्य समाज " की स्थापना किसने की?
क) राजा राममोहन राय **ख) दयानंद सरस्वती**
ग) रामकृष्ण परमहंस घ) स्वामी विवेकानंद

38) स्वामी विवेकानंद के गुरु का नाम क्या था?
क) राजा राममोहन राय ख) दयानंद सरस्वती
ग) रामकृष्ण परमहंस घ) महात्मा गांधी

39) शांतिनिकेतन शिक्षा संस्था की स्थापना किसने की थी?
क) राजा राममोहन राय ख) दयानंद सरसवती
ग) रामकृष्ण परमहंस **घ) रवीद्रनाथ टैगोर**

40) " मेरी आंकाक्षा है हर आँख से हर आँसू को पोंछ लेना ।" ये शब्द किसने कहे थे?
क) महात्मा गांधी ख) राजा राममोहन राय
ग) अबुल कलाम आजाद घ) मोहम्मद अली जिन्ना

* दीर्घ उत्तर प्रश्न

1) भरा-पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद? कामचोर कहानी के आधार पर निर्णय कीजिए।

उ- यदि सारा-परिवार मिल जुलकर कार्य करे तो घर को सुखद बनाया जा सकता है। इससे घर के किसी भी सदस्य पर अधिक कार्य का दबाव नहीं पड़ेगा। सब अपनी अपनी कार्यक्षमता के आधार पर कार्य को बाँट लें व उसे समय पर निपटा लें तो सब को एक दूसरे के साथ वक्त बिताने का अधिक समय मिलेगा इससे सारे घर में आपसी प्रेम का विकास होगा और खुशहाली ही खुशहाली होगी। इसके विपरीत यदि घर के सदस्य घर के कामों के प्रति बेरूखा व्यवहार रखेंगे और किसी भी काम में हाथ नहीं बटाएँगे तो सारे घर में अशांति ही फैलेगी, घर में खर्च का दबाव बनेगा, घर के सभी सदस्य कामचोर बन जाएँगे और अपने कामों के लिए सदैव दूसरों पर निर्भर रहेंगे जिससे एक ही व्यक्ति पर सारा दबाव बन जाएगा। यदि इन सबसे निपटने की कोशिश की गई तो वही हाल होगा जो कामचोर में घर के बच्चों ने घर का किया था। वे घर की शन्ति व सुःख को एक ही पल में बर्बाद कर देंगे। इसलिए चाहिए कि बचपन से ही बच्चों को उनके काम स्वयं करने की आदत डालनी चाहिए ताकि उन्हें आत्मनिर्भर भी बनाया जाए और घर के प्रति ज़िम्मेदार भी।

2) बड़े होते बच्चे किस प्रकार माता-पिता के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार? कामचोर कहानी के आधर पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ-अगर बच्चों को बचपन से अपना कार्य स्वयं करने की सीख दी जाए तो बड़े होकर बच्चे

माता-पिता के बहुत बड़े सहयोगी हो सकते हैं। वह अगर अपने आप नहा धोकर स्कूल के लिए तैयार हो जाएँ, अपने जुराब स्वयं धो लें व जूते पालिश कर लें, अपने खाने के बर्तन यथा सम्भव स्थान पर रख आएँ, अपने कमरे को सहज कर रखें तो माता-पिता का बहुत सहयोग कर सकते हैं। यदि इससे उलटा हम बच्चों को उनका कार्य करने की सीख नहीं देते तो वह सहयोग के स्थान पर माता-पिता के लिए भार ही साबित होंगे। उनके बड़ा होने पर उनसे कोई कार्य कराया जाएगा तो वह उस कार्य को भली-भांति करने के स्थान पर तहस-नहस ही कर देंगे, जैसे की कामचोर लेख पर बच्चों ने सारे घर का हाल कर दिया था।

3)"चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

उपर्युक्त पंक्ति कौन, किससे कह रहा है?

इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

इस उपालंभ "शिकायत" के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है?

उत्तर-यहाँ श्रीकृष्ण अपने बालसखा सुदामा से कह रहे हैं कि तुम्हारी चोरी करने की आदत या छुपाने की आदत अभी तक गई नहीं। लगता है इसमें तुम पहले से अधिक कुशल हो गए हो। सुदामा की पत्नी ने श्रीकृष्ण के लिए भेंट स्वरूप कुछ चावल भिजवाए थे। संकोचवश सुदामा श्रीकृष्ण को यह भेंट नहीं दे पा रहे हैं। क्योंकि कृष्ण अब द्वारिका के राजा हैं और उनके पास सब सुख-सुविधाएँ हैं। परन्तु श्रीकृष्ण सुदामा पर दोषारोपण करते हुए इसे चोरी कहते हैं और कहते हैं कि चोरी में तो तुम पहले से ही निपुण हो। इस शिकायत के पीछे एक पौरोणिक कथा है। जब श्रीकृष्ण और सुदामा आश्रम में अपनी-अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। उस समय एक दिन वे जंगल में लकड़ियाँ चुनने जाते हैं। गुरूमाता ने उन्हें रास्ते में खाने के लिए चने दिए थे। सुदामा श्रीकृष्ण को बिना बताए चोरी से चने खा लेते हैं। उसी चोरी की तुलना करते हुए श्रीकृष्ण सुदामा को दोष देते हैं।

4)"साइकिल आंदोलन" से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कौन-कौन से बदलाव आए हैं?

उत्तर- साइकिल आंदोलन से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कई बदलाव आए हैं-

- साइकिल आंदोलन से महिलाएँ छोटे-मोटे बाहर के काम स्वयं करने लगी।
- साइकिल आंदोलन से वे अपने उत्पाद कई गाँव में ले जाकर बेचने लगी।
- साइकिल आंदोलन से उनकी आर्थिक स्थिति सुधरी है।
- साइकिल आंदोलन से समय और श्रम की बचत हुई है।
- साइकिल आंदोलन ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाया।

5) प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन-कौन सी बाधा आई?

उत्तर- प्रारम्भ में साइकिल आंदोलन चलाने में कुछ मुश्किलें आईं जैसे-

- सर्वप्रथम गाँव के लोग बहुत ही रूढ़िवादी थे। उन्होंने महिलाओँ के उत्साह को तोड़ने का प्रयास किया।
- महिलाओँ के साइकिल चलाने पर उन पर फ़ब्तियाँ कसी।
- महिलाओँ के पास साइकिल शिक्षक का अभाव था, जिसके लिए उन्होंने स्वयं साइकिल सिखाना आरम्भ किया और आंदोलन की गति पर कोई असर नहीं पड़ने दिया।

6) पं बिलवासी मिश्र कहाँ आते दिखाई पड़े? उन्होंने आते ही क्या किया? उन्होंने अंग्रेज के साथ किस प्रकार सहानुभूति प्रकट की?

उत्तर-पं बिलवासी मिश्र भीड़ को चीरते हुए आँगन में आते दिखाई पड़े। उन्होंने आते ही पहला काम

यह किया कि उस अंग्रेज को छोड़ कर बाकी जितने लोग थे सबको बाहर कर रास्ता दिखाया और फिर आगँन में कुर्सी रखकर उन्होंने उस अंग्रेज से कहा कि उसके पैर में शायद कुछ चोट आ गई है। इसलिए वह आराम से कुर्सी पर बैठ जाइए। जब पं बिलवासी ने अंग्रेज को बैठने को कहा तो अंग्रेज बिलवासी जी को धन्यवाद देते हुए बैठ गया। लाला झाऊलाल की ओर इशारा करके अंग्रेज ने बिलवासी जी से पूछा कि क्या वे लाला को जानते हैं? बिलवासी बिलकुल मुकर गए और कहते हैं कि वे लाला को बिलकुल नहीं जानते और न ही वह ऐसे आदमी को जानना चाहते हैं जो राह चलते व्यक्तियों को लोटे से चोट पहुँचाए।